राजस्थानी रै बिना गूंगो राजस्थान

--डॉ. राजेन्द्र बारहट

संयुक्त राष्ट्र संघ मानवाधिकार नै समझावणा सारू नेम बणायों जिणमें साÈ तौर सूं मानीजियों क मिनख नैं आपरी भाषा रै बरताव रौ अधिकार छै । आ प्रजातंत्र री मूल अवधारणा में आवै। भारत में आजादी पछै जनतंत्री शासन व्यवस्था आपांरा देश में बणाई । भारत रौ संविधान मौलिक अधिकार देश वासियों ने देवै । विणां में भाषा, संस्कृति, आस्था रै बरताव रा अधिकार संविधान जनता ने देवें। यू.अेन.ओ.री शैक्षिक परिषद पूरी दूनिया रा शैक्षिक शौध रे बाद औ निरणै करियों क बाळक नै प्राथमिक शिक्षा आपरी मायड़ भाषा में दिरीजणी चाहिये । आ अवधारणा आखी दुनिया में मानीजै अर करीजै भारत में भी बड़ा हिस्सा में आ अवधारणा इज थापन छे। पण राजस्थान में आजदी बाद अेक सांस्कृतिक गुलामी झेलणी पड़ री छे । आपांरी तीन पीढिय़ा आजादी बाद आई, जिणांनै आपरी मायड़ भाषा पढ़वा नै नी मिली। इण वास्ते नवी पीढ़ी आपारी सस्कृति री जड़ा सू कट रैयी छै। आपांरा बालका नै आपरी मायड़ भाषा पढ़वारी सुविधा कोनी, जो सुविधा पंजाब गुजरात अर दूजा प्रांता रा टाबरां नै आपरी भाषा माध्यम मिलै। इण कारण राजस्थान में अन्याय आधारित प्रजातंत्री व्यवस्था छै। आपांरा प्रांत में टाबर मां रा पेट सूं जनम लेयर ईस्कूल जावै जठा तक जितरा सबद सीखै, आपांरी पीढिय़ा विणां सबदां सूं आपरी जूंण रा सब काम कर लिया । मतलब वै सबद मायड़ भाषा रा अेक जमारा नै पार पटकवा वास्ते पर्याप्त छै। पण आपांरा प्रांत में टाबर मां रा दूध रै साथे संस्कार रूप में मायड़ भाषा सीखे घर में सुभाविक रूप सूं पिणां सबदों में स्कूल में जावतां ई मारसाब कूट कूटञ्जर डरा डराञ्जर हीनता मैसूस करायञ्जर छुड़ावै अर इण तरै भुलावै क ऐसे नहीं ऐसे बोलो गांव की भाषा क्या बोलते हो। औ मानवाधिकार रो खूलौ उल्लंघन छै मनौविज्ञानिक शौषण छै, जो लोकतांत्रिक नी कहीजै। जद गुजरात पंजाब अर देश रा दूजा प्रांता रा मुख्यमंत्री सचिवालय, शिक्षा सब विणांरी भाषा में चालै तद तौ विणंनै हीन नीं मानिया जावे, तो राजस्थान री शिक्षा में अनिवार्य पौथी हरेक कक्षा में राजस्थानी री होवै तौ ईज आपां जड़ां संस्कृति री सींच सकांला। नरेन्द्र मोदी नै गुजराती बोलतां, ममता बनर्जी नैं बंगला बोलता, जयललिता-करूणानिधि नै तामिल बौलता, चंद्रबाबू नायडू नै तेलुबू बोलतां अर सब प्रांता रा नेता उठै री भाषा बौले गरब अर गुमेज रै साथे अर विणांरी शिक्षा, सचिवालय, भाषण, सब कुछ आपरी भाषा में होवै तो आयां क्यूं संकोच करो छो। आपांनै चेतणौ पड़ेला, आ गलती आपां सू व्हेगी इणनै सुधारणी पड़ेला, इण वास्ते जन कवि पद्म श्री कन्हैयालाल सेठिया कहयौ - क

मायड भाषा बोलता, जिणनै आवे लाज ।

इसा कपूता सूं दूखी, आखौ देश समाज ।।

राजनीति री दीठ सूं बणग्यौ राजस्थान ।

पण निज भाषा रै बिना, औ लागे निष्प्राण ।।

अंत में मारी अरज आपनै-

औळख आपांरीह, जाती, दीखै जगत सूं ।।

राखौ तौ रूक जाय, नी तौ आ जासी परी ।

जनभाषा पगतल दबी, सबरी बिगड़े शान।

राजस्थानी रै बिना, गूंगौ राजस्थान ।।